हिंदी विश्वविद्यालय में विश्व हिंदी दिवस आयोजित

भारतीय रिज़र्व बैंक व विश्वविद्यालय का संयुक्त आयोजन

भारतीय भाषाओं साथ लेकर चले हिंदी – प्रो. के. के. सिंह

वर्धा दि. 10 जनवरी 2016: हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए सभी भारतीय और विदेशी भाषाओं के शब्दों को साथ लेना चाहिए। वैश्विकरण के बदलते दौर में भाषाओं के अस्तित्व को खतरे पैदा हो रहे हैं।

हिंदी के सामने भी चुनौतियां है। भाषाओं को बचाने लिए हिंदी को सभी भाषाओं को लेकर वैश्विक विकास का मार्ग प्रशस्त करना होगा। उक्त प्रतिपादन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने किए। वे विश्व हिंदी दिवस के मौके पर वक्ता के रूप में वक्तव्य दे रहे थे। विवि के हबीब तनवीर सभागार में भारतीय रिज़र्व बैंक, नागपुर एवं विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मंच पर भारतीय रिज़र्व बैंक की क्षेत्रीय निदेशक जुथिका जीबानी, नागपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष तथा बैंक ऑफ इंडिया के आंचलिक प्रबंधक चंद्रकांत पोपेरे, विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृपा शंकर चौबे उपस्थित थे।

भारतीय रिज़र्व बैंक में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में विश्व हिंदी दिवस का कार्यक्रम हिंदी विश्वविद्यालय में रविवार को आयोजित किया गया। जिसमें सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों के प्रतिनिधि, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य, विवि के अध्यापक एवं छात्र प्रमुखता से उपस्थित थे।

अपने संबोधन में प्रो. के. के. सिंह ने कहा कि भाषाएं लगातार पतन की ओर जा रही हैं। कई भाषाएं तो लुप्त हो रही हैं। हिंदी के सामने भी अंग्रेजी भाषा का संकट है। ऐसे में अत्यंत कठीन शब्दों के प्रयोगों को त्यागकर सरल और जनभाषा के शब्दों का इस्तेमाल हिंदी में करना आवश्यक बनता जा रहा है। हिंदी के विकास में तकनीक के

योगदान को महत्वपूर्ण मानते हुए उन्होंने कहा कि आज का दौर तकनीक का है। बाजार भी तकनीक से ही संचालीत हो रहा है। हिंदी के विस्तार के लिए तकनीक का प्रयोग जरूरी हो गया है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हिंदी को तकनीक से जोड़ने के प्रयासों के बारे में अवगत कराया।

मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृपा शंकर चौबे ने हिंदी का वैश्विक

परिदृश्य विषय पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि हिंदी के वैश्विक विकास में हिंदी फिल्मों का महति योगदान

रहा है। हिंदी एक नीरभरी नदी है। उन्होंने कहा कि हिंदी में अनेक शब्द ऐसे है जो पूर्तगाल, तुर्की, फारसी, अरबी, डच आदि भाषाओं से लिए गये हैं। वर्तनी की अराजकता को त्यागकर हिंदी को सरल और सुगम बनाने की दिशा में प्रयास होने चाहिए ताकि वह वैश्वकि पटल पर अपना स्थान अधिक मजबूत कर सकेगी। हिंदी का समाज बनाने के लिए सभी को आगे आने की जरूरत पर उन्होंने बल दिया।

रिज़र्व बैंक की क्षेत्रीय निदेशक जुथिका जीबानी ने कहा कि ग्राहक बैंक के कामकाज को आसानी से समझे इसके

लिए हमने एक शब्दकोश तैयार किया है और उसे नेट पर भी उपलब्ध कराया गया है। उन्होंने सभी बैंकों से अनुरोध किया कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें। बैंक ऑफ इंडिया के आंचलिक प्रबंधक चंद्रकांत पोपेरे ने भी हिंदी के विकास में बैंकों के योगदान पर अपनी बात रखी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के डायस्पोरा विभाग द्वारा हिंदी के तकनीकी विकास और विदेशों में हिंदी की उपस्थिति को लेकर एक प्रदर्शनी लगायी गयी थी जिसे उपस्थितों द्वारा काफी सराहा गया। डायस्पोरा विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजीव रंजन राय ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विवि के प्रयासों से उपस्थितों को अवगत कराया। कार्यक्रम का संयोजन जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे ने किया। कार्यक्रम का प्रारंभ अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। इस मौके पर रिज़र्व बैंक द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कारों का वितरण अतिथियों के हाथों किया गया। कार्यक्रम का प्रास्ताविक रिज़र्व बैंक, नागपुर के सहायक प्रबंधक प्रशांत रामटेके ने किया। संचालन रिज़र्व बैंक में सहायक प्रबंधक डॉ. निधि ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन सहायक महा प्रबंधक बी. एन. मेश्राम ने किया। समारोह के बाद सभी अतिथियों ने गांधी हिल जाकर महात्मा गांधी की प्रतिमा का अभिवादन किया। परिसर को देखकर सभी ने प्रसंन्नता जाहीर की तथा विवि के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र एवं कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र के सहयोग के प्रति आभार जताया। इस अवसर पर कमर्शिएल बैंकों के जोनल मैनेजर एवं राजभाषा अधिकारी, भारतीय रिजर्व बैंक के उप महा प्रबंधक श्री कामेश्वर राव, बैंक ऑफ इंडिया के अंचल दो के आंचलिक प्रबंधक श्री कदम, सहा. महा प्रबंधक नीता गेडाम, अग्रणी जिला बैंक के प्रबंधक विजय जांगडा, वर्धा सहायक महा प्रबंधक नाबार्ड डॉ. स्नेहल बनसोड, वर्धा ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के अनिल पाटील, बैंक ऑफ इंडिया विश्वविद्यालय शाखा के प्रबंधक संदीप लोथे, बैंक ऑफ इंडिया वर्धा के मुरलीधर बेलखोडे, विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर राजेश लेहकपुरे, डॉ. राजीव रंजन राय सहित विद्यार्थी प्रमुखता से उपस्थित थे।

हिंदी विश्वविद्यालयात विश्व हिंदी दिवस आयोजित

भारतीय रिज़र्व बैंक व विश्वविद्यालयाचे का संयुक्त आयोजन

भारतीय भाषांना कवेत घेवून हिंदीने चालावे – प्रो. के. के. सिंह

वर्धा दि. 10 जानेवारी 2016: हिंदी भाषेला वैश्विक भाषेचे स्थान प्राप्त होण्यासाठी हिंदीने भारतीय भाषांना कवेत घेवून चालले पाहिजे. वैश्विकरणाच्या बदलते काळात भाषांपुढे अस्तित्वाचे धोके निर्माण झाले आहेत. भाषा वाचविण्यासाठी हिंदीने इतर भाषांना सोबत घेवून स्वत:ला समृद्ध केले पाहिजे असे मत महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयातील साहित्य विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंग यांनी व्यक्त केले. भारतीय रिजर्व बँक नागपूर आणि विश्वविद्यालय यांच्या वतीने आयोजित विश्व हिंदी दिवस कार्यक्रमात प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. हबीब तनवीर सभागृहात आयोजित कार्यक्रमात मंचावर भारतीय रिजर्व बँकेच्या क्षेत्रीय निदेशक जुथिका जीबानी, नागपूर, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितीचे अध्यक्ष तथा बँक ऑफ इंडियाचे आंचलिक प्रबंधक चंद्रकांत पोपेरे, विश्वविद्यालयातील जनसंचार विभागाचे अध्यक्ष डॉ. कृपा शंकर चौबे उपस्थित होते.

प्रो. के. के. सिंग म्हणाले की भाषांचे सातत्याने पतन होत चालले आहे. कित्येक भाषा तर लुप्तही होत आहेत. हिंदी पुढेही इंग्रजीचे आव्हान आहे. हिंदीला विस्तारित करण्यासाठी अत्यंत कठीन शब्दांचा वापर टाळून जनभाषेतील शब्द प्रयोगात आणले पाहिजे असे ते म्हणाले.

मुख्य वक्ता डॉ. कृपा शंकर चौबे यांनी हिंदीचा वैश्विक भूगोल यावर आपले मत मांडले. ते म्हणाले की हिंदी चित्रपटांनी हिंदीला जगात पोहचविण्यात महत्वाची कामगिरी केली. हिंदीतील अनेक शब्द पूर्तगाल, तुर्की, फारसी, अरबी, डच इत्यादी भाषांमधून घेतलेले आहेत. हिंदीचे सामाजिकरण करण्याची गरज असल्याचे ते म्हणाले.

रिज़र्व बँकेच्या क्षेत्रीय निदेशक जुथिका जीबानी म्हणाल्या की ग्राहकांना बँकेची कार्यपद्धती समजण्यासाठी रिजर्व बँकेने शब्दकोश तयार केला आहे आणि तो इंटरनेटवरही उपलब्ध केला आहे. चंद्रकांत पोपेरे यांनीही मार्गदर्शन केले. यावेळी विश्वविद्यालयाच्या डायस्पोरा विभागाने एक प्रदर्शनही लावले होते. कार्यक्रमाचे संयोजन जनसंपर्क अधिकारी बी. एस. मिरगे यांनी केले. कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक रिज़र्व बँक, नागपूरचे सहायक प्रबंधक प्रशांत रामटेके यांनी केले . संचालन रिज़र्व बँक नागपूर येथील सहायक प्रबंधक डॉ. निधी यांनी केले तर आभार सहायक महा प्रबंधक बी. एन. मेश्राम यांनी मानले. कार्यक्रमाला नागपूर आणि वर्धा येथील कमर्शिएल बँकांचे झोनल व्यवस्थापक, राजभाषा अधिकारी, भारतीय रिजर्व बँकेचे उप महाप्रबंधक कामेश्वर राव, कदम, सहा. महा प्रबंधक नीता गेडाम, अग्रणी जिला बँकेचे प्रबंधक विजय जांगडा, वर्धा, सहायक महा प्रबंधक नाबार्ड डॉ. स्नेहल बनसोड, वर्धा, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थेचे अनिल पाटील, बँक ऑफ इंडिया विश्वविद्यालय शाखेचे व्यवस्थापक संदीप लोथे, बँक ऑफ इंडियाचे मुरलीधर बेलखोडे, विश्वविद्यालयाचे सहायक प्रोफेसर राजेश लेहकपुरे, डॉ. राजीव रंजन राय यांच्यासह विद्यार्थी उपस्थित होते.